

Bihar Assistant Professor History Sample Paper

Q1. 'पुरंदर की संधि' (1665) पर निम्नलिखित में से किसके बीच हस्ताक्षर किए गए थे?

- (a) अकबर और राणा प्रताप
- (b) जय सिंह और अकबर
- (c) जय सिंह और शिवाजी
- (d) औरंगज़ेब और शाहू

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर (c) है।

पुरंदर की संधि (1665) एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक और सैन्य समझौता था जिसने मराठों की विस्तारवादी शक्ति को अस्थायी रूप से रोक दिया था। यह औरंगज़ेब की ओर से एक अनुभवी राजपूत जनरल द्वारा संचालित एक अत्यंत सफल मुगल अभियान का परिणाम था।

Information Booster

- संधि पर 11 जून, 1665 को छत्रपति शिवाजी महाराज और आमेर के मिर्जा राजा जय सिंह के बीच हस्ताक्षर किए गए थे।
- पिछले मुगल कमांडरों की बुरी तरह विफलता के बाद सम्राट औरंगज़ेब ने शिवाजी को वश में करने के लिए जय सिंह को नियुक्त किया था।
- पुरंदर के किले में तीव्र घेराबंदी के तहत, शिवाजी ने अपनी सेनाओं को बचाने के लिए युद्धविराम की रणनीतिक आवश्यकता को पहचाना।
- संधि की मुख्य शर्तों ने शिवाजी को अपने 35 में से 23 किले मुगलों को सौंपने के लिए मजबूर किया, केवल 12 अपने पास रखे।
- शिवाजी ने मुगल आधिपत्य स्वीकार करने, दक्कन (बीजापुर के खिलाफ) में मुगल युद्ध के लिए एक मराठा टुकड़ी की आपूर्ति करने और अपने बेटे संभाजी को मनसबदार के रूप में मुगल दरबार में भेजने पर भी सहमति व्यक्त की।
- इस संधि के कारण 1666 में शिवाजी की प्रसिद्ध, दुर्भाग्यपूर्ण आगरा यात्रा हुई।

Additional Knowledge

- विकल्प A 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के प्रसिद्ध विरोधियों को संदर्भित करता है, जिसका समापन हल्दीघाटी के युद्ध (1576) में हुआ था, जो पुरंदर की संधि से लगभग एक शताब्दी पहले था।
- विकल्प B में एक कालानुक्रमिक और राजनीतिक विसंगति है; जय सिंह I ने शाहजहाँ और औरंगज़ेब की सेवा की थी, अकबर की नहीं।
- विकल्प D में शिवाजी के पोते शाहू का उल्लेख है। शाहू को औरंगज़ेब ने कैद कर लिया था और औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद 1707 में बहादुर शाह I द्वारा ही उन्हें रिहा किया गया था।

Q2. ऐतिहासिक आलोचना में, अभिव्यक्ति "निहिल ऑब्स्टेट" का अर्थ है कि:

- (a) कथन पूर्ण ऐतिहासिक सत्य का प्रतिनिधित्व करता है
- (b) कथन के विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं है
- (c) साक्ष्य को अविश्वसनीय मानकर अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए
- (d) निष्कर्ष निश्चितता के साथ सिद्ध हो गया है

Ans.(b)

Sol. सही उत्तर है (b)।

ऐतिहासिक आलोचना को स्रोतों की वैधता का मूल्यांकन करने के लिए सटीक शब्दावली की आवश्यकता होती है। लैटिन वाक्यांश "निहिल ऑब्स्टेट" का उपयोग ज्ञानमीमांसा और पाठ्य आलोचना में सत्य के सकारात्मक प्रमाण के बजाय विरोधाभास की अनुपस्थिति को इंगित करने के लिए किया जाता है।

Information Booster

- "निहिल ऑब्स्टेट" का लैटिन से शाब्दिक अनुवाद है "कुछ भी आड़े नहीं आता" या "कोई आपत्ति नहीं है।"
- ऐतिहासिक पद्धति के संदर्भ में, इसका अर्थ है कि एक विशेष ऐतिहासिक दावा या दस्तावेज़ ज्ञात, स्थापित तथ्यों का खंडन नहीं करता है।
- यह दर्शाता है कि कथन को गलत साबित करने के लिए कोई विपरीत प्रमाण नहीं है।
- हालाँकि, महत्वपूर्ण रूप से, इसका मतलब यह नहीं है कि कथन निश्चित रूप से सत्य है; इसका सीधा सा मतलब है कि यह प्रशंसनीय है और वर्तमान साक्ष्यों के आधार पर इसे सक्रिय रूप से खारिज नहीं किया जा सकता है।
- यह शब्द मूल रूप से कैथोलिक चर्च से आया है, जहाँ यह दर्शाता है कि किसी पुस्तक में विश्वास या नैतिकता के लिए हानिकारक कुछ भी नहीं है और इसे प्रकाशन के लिए मंजूरी दे दी गई है।

Additional Knowledge

- विकल्प A गलत है क्योंकि इतिहास शायद ही कभी "पूर्ण" सत्यों में डील करता है; निहिल ऑब्स्टेट का केवल अर्थ है कि इसे गलत साबित नहीं किया गया है, न कि यह कि यह एक अचूक तथ्य है।
- विकल्प C बिल्कुल विपरीत अर्थ दर्शाता है। यदि साक्ष्य को अस्वीकार किया जाना चाहिए, तो इसका मतलब है कि वहाँ कोई आपत्ति या विरोधाभासी प्रमाण है, जो निहिल ऑब्स्टेट की अवधारणा को नकारता है।
- विकल्प D गलत है क्योंकि "निश्चितता के साथ सिद्ध" होने के लिए सकारात्मक, पुष्ट करने वाले प्राथमिक साक्ष्य की आवश्यकता होती है, जबकि निहिल ऑब्स्टेट केवल एक नकारात्मक स्थिति (विरोधाभास की अनुपस्थिति) पर निर्भर करता है।

Q3. असम में मुगल नियंत्रण के पतन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

- A. मीर जुमला की असम में अपने सफल अभियान के तुरंत बाद मृत्यु हो गई।
- B. अहोमों ने 1667 में मुगलों के खिलाफ संघर्ष फिर से शुरू कर दिया।
- C. अहोमों ने न केवल सौंपे गए क्षेत्रों को वापस पा लिया बल्कि गुवाहाटी पर भी कब्जा कर लिया।

- D. असम में लंबे समय तक मुगल कमांडर आमेर के राजा राम सिंह थे।
E. इन अभियानों के बाद मुगलों ने असम में अपने अधिकार को स्थायी रूप से मजबूत कर लिया।
- (a) केवल A, B, C और D
(b) केवल B, C और E
(c) केवल A, C, D और E
(d) केवल A, B और E

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर (a) है।

औरंगज़ेब के शासनकाल के दौरान असम को जीतने के मुगल प्रयासों ने साम्राज्य की रसद संबंधी सीमाओं को उजागर किया जब उसे शत्रुतापूर्ण इलाके और अहोम साम्राज्य जैसी भयंकर स्वतंत्र क्षेत्रीय शक्तियों का सामना करना पड़ा।

Information Booster

- औरंगज़ेब के सेनापति, मीर जुमला ने सफलतापूर्वक असम पर आक्रमण किया और 1663 में घिलाझारीघाट की संधि के लिए मजबूर किया, लेकिन ढाका वापस जाते समय शीघ्र ही उनकी मृत्यु हो गई (A)।
- इसका लाभ उठाते हुए, अहोम राजा चक्रध्वज सिंह ने 1667 (B) में संघर्ष फिर से शुरू कर दिया।
- लचित बोरफुकन के शानदार सैन्य नेतृत्व में, अहोमों ने अपने खोए हुए क्षेत्रों को वापस पा लिया और रणनीतिक शहर गुवाहाटी (C) पर सफलतापूर्वक कब्जा कर लिया।
- इसका मुकाबला करने के लिए, औरंगज़ेब ने आमेर के राजा राम सिंह (D) को भेजा, जिन्होंने अहोमों से लड़ने में वर्षों बिताए लेकिन अंततः 1671 में सरायघाट के ऐतिहासिक युद्ध में हार गए।
- अहोमों ने मुगल बेड़े को कुचलने के लिए बेहतर नौसैनिक रणनीति और ब्रह्मपुत्र की स्थलाकृति के अंतरंग ज्ञान का उपयोग किया।

Additional Knowledge

- विकल्प B, C और D गलत हैं क्योंकि वे या तो वैध ऐतिहासिक तथ्यों (जैसे राम सिंह की कमान) को बाहर करते हैं या कथन E को शामिल करते हैं। कथन E पूरी तरह से गलत है। मुगलों ने कभी भी असम में अपने अधिकार को स्थायी रूप से मजबूत नहीं किया। 1682 में ईटाखुली के युद्ध के बाद, मुगलों को कामरूप से स्थायी रूप से निष्कासित कर दिया गया था, और मानस नदी मुगल साम्राज्य और अहोम साम्राज्य के बीच स्थापित सीमा बन गई।

Q4. किसने तर्क दिया कि इतिहास इतिहासकार के मन में अतीत के विचार का पुनः अधिनियमन है?

- (a) आर. जी. कॉलिंगवुड
(b) ई. एच. कार
(c) अर्नोल्ड टायनबी
(d) लियोपोल्ड वॉन रांके

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर (a) है।

यह गहन इतिहासलेखन अवधारणा ब्रिटिश दार्शनिक और इतिहासकार आर.जी. कॉलिंगवुड की है। उन्होंने यह तर्क देकर इतिहास के दर्शन में क्रांति ला दी कि अतीत को समझने के लिए केवल घटनाओं का विश्लेषण करने से कहीं अधिक की आवश्यकता होती है; इसके लिए उन घटनाओं के पीछे की मानसिक स्थितियों के साथ जुड़ना आवश्यक है।

Information Booster

- आर.जी. कॉलिंगवुड ने स्पष्ट रूप से अपनी महत्वपूर्ण मरणोपरांत कृति, "द आइडिया ऑफ हिस्ट्री" (1946) में इस शोध को व्यक्त किया।
- उन्होंने तर्क दिया कि ऐतिहासिक ज्ञान मौलिक रूप से इस बात का ज्ञान है कि लोगों ने क्या सोचा था।
- कॉलिंगवुड के अनुसार, एक इतिहासकार को ऐतिहासिक पात्रों के विचारों को वास्तव में समझने के लिए उनके कार्यों और निर्णयों को अपने मन में फिर से सोचना चाहिए।
- यह दृष्टिकोण इतिहास को प्राकृतिक विज्ञानों से अलग करता है, जो केवल भौतिक घटनाओं का अध्ययन करते हैं, जबकि इतिहास इरादतन मानवीय कार्यों का अध्ययन करता है।
- कॉलिंगवुड का दृष्टिकोण दर्शन और इतिहास को जोड़ता है, जो ऐतिहासिक साक्ष्यों द्वारा सख्ती से सीमित सहानुभूतिपूर्ण कल्पना की मांग करता है।

Additional Knowledge

- विकल्प B (ई. एच. कार) अपनी पुस्तक "इतिहास क्या है?" (What is History?) के लिए प्रसिद्ध हैं जहाँ वे इतिहास को "वर्तमान और अतीत के बीच एक अंतहीन संवाद" के रूप में वर्णित करते हैं, जो विशुद्ध मनोवैज्ञानिक पुनः अधिनियमन के बजाय समाजशास्त्रीय और वस्तुनिष्ठ कारकों पर केंद्रित है।
- विकल्प C (अर्नोल्ड टायनबी) "ए स्टडी ऑफ हिस्ट्री" में अपने भव्य सभ्यता संबंधी शोध के लिए जाने जाते हैं, जो व्यक्तिगत संज्ञानात्मक पुनः अधिनियमन के बजाय वैश्विक सभ्यताओं के बीच चुनौती और प्रतिक्रिया के चक्रीय पैटर्न पर केंद्रित है।
- विकल्प D (लियोपोल्ड वॉन रांके) प्रत्यक्षवादी इतिहास के जनक हैं, जो इतिहास को "जैसा वह अनिवार्य रूप से था" दिखाने के लिए प्राथमिक स्रोतों पर वस्तुनिष्ठ निर्भरता पर जोर देते हैं, और व्यक्तिपरक सहानुभूतिपूर्ण छलांगों से बचते हैं।

Q5. महाराष्ट्र में काशीनाथ त्रयंबक तेलंग से जुड़ा सुधारवादी स्कूल किस संगठन के साथ निकटता से जुड़ा था?

- आर्य समाज
- प्रार्थना समाज
- ब्रह्म समाज
- डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी

Ans.(b)

Sol. सही उत्तर (b) है।

महाराष्ट्र के एक प्रमुख भारतविद् और उदारवादी समाज सुधारक काशीनाथ त्रयंबक तेलंग, प्रार्थना समाज के साथ वैचारिक रूप से निकटता से जुड़े थे, और उन्होंने इसे पूरी तरह से हिंदू ढांचे के भीतर प्रगतिशील सामाजिक सुधारों के लिए एक शक्तिशाली मंच के रूप में उपयोग किया।

Information Booster

- प्रार्थना समाज की औपचारिक रूप से स्थापना 1867 में बॉम्बे में डॉ. आत्माराम पांडुरंग द्वारा की गई थी, जो ब्रह्म नेता केशव चंद्र सेन की यात्रा से अत्यधिक प्रेरित थे।
- के.टी. तेलंग, एम.जी. रानाडे और आर.जी. भंडारकर जैसे दिग्गज हस्तियों के साथ मिलकर समाज के पूर्ण बौद्धिक और वैचारिक आधार का निर्माण किया।
- बंगाल में अधिक कट्टरपंथी ब्रह्म समाज के विपरीत, प्रार्थना समाज ने रूढ़िवादी हिंदुत्व से हिंसक रूप से अलग होने की कोशिश नहीं की, बल्कि भीतर से क्रमिक, स्वाभाविक सुधार का लक्ष्य रखा।
- तेलंग ने महिला शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह और जाति व्यवस्था एवं अस्पृश्यता के पूर्ण उन्मूलन की पुरजोर वकालत की।
- वे दृढ़ता से उदारवादी, संवैधानिक विचारधारा वाले स्कूल से संबंधित थे, जिनका दृढ़ विश्वास था कि सामाजिक सुधार को राजनीतिक प्रगति के साथ होना चाहिए या उससे पहले होना चाहिए।
- तेलंग अविश्वसनीय रूप से प्रतिष्ठित थे, उन्होंने बॉम्बे उच्च न्यायालय के न्यायाधीश और बॉम्बे विश्वविद्यालय के पहले भारतीय कुलपति के रूप में कार्य किया।

Additional Knowledge

- **A (आर्य समाज):** 1875 में बॉम्बे में स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित, इसने अचूक वेदों की ओर लौटने और हिंदू पुनरुत्थानवाद के एक जुझारू रूप की वकालत की, जो तेलंग के उदारवादी, तर्कवादी दृष्टिकोण के बिल्कुल विपरीत था।
- **C (ब्रह्म समाज):** बंगाल (1828) में राजा राम मोहन राय द्वारा स्थापित, इसने प्रार्थना समाज को बहुत प्रभावित किया लेकिन एक पूरी तरह से अलग क्षेत्रीय संदर्भ में संचालित हुआ और रूढ़िवादी हिंदू अनुष्ठानों से अलग होने में कहीं अधिक कट्टरपंथी था।
- **D (डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी):** 1884 में जी.जी. अगरकर, बी.जी. तिलक और अन्य द्वारा पुणे में स्थापित, प्रार्थना समाज के व्यापक धार्मिक/सामाजिक सुधार एजेंडे के बजाय राष्ट्रवादी शिक्षा (फर्ग्यूसन कॉलेज की स्थापना) पर कड़ाई से और विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करती थी।

Q6. जेजाकभुक्ति में भुक्ति शब्द क्या दर्शाता है:

- (a) एक धार्मिक संप्रदाय
- (b) एक प्रांतीय प्रशासनिक प्रभाग
- (c) एक सैन्य उपाधि

(d) एक भू-राजस्व कर

Ans.(b)

Sol. सही उत्तर है (b)।

प्राचीन और प्रारंभिक मध्यकालीन भारतीय प्रशासनिक शब्दावली में, भुक्ति शब्द एक बड़े प्रांतीय प्रशासनिक प्रभाग को संदर्भित करता है, जो मोटे तौर पर एक आधुनिक प्रांत के बराबर है। जेजाकभुक्ति बुंदेलखंड क्षेत्र का विशिष्ट प्राचीन भौगोलिक नाम था, जिस पर प्रसिद्ध रूप से राजपूत चंदेल राजवंश का शासन था।

Information Booster

- गुप्त काल के दौरान एक प्रमुख प्रांत को निरूपित करने के लिए भुक्ति शब्द व्यापक रूप से मानकीकृत हो गया था, जिसे आगे पदानुक्रमित रूप से विषयों में विभाजित किया गया था।
- एक भुक्ति आमतौर पर सीधे राजा द्वारा नियुक्त एक उच्च पदस्थ अधिकारी द्वारा शासित होती थी, जिसे अक्सर उपरिक या उपरिक महाराज जैसी भव्य उपाधियों से सुशोभित किया जाता था।
- जेजाकभुक्ति का नाम सीधे चंदेल राजवंश के एक प्रारंभिक, प्रमुख और संस्थापक शासक जेजा से लिया गया था।
- जेजाकभुक्ति के चंदेल अपनी उल्लेखनीय मंदिर वास्तुकला के लिए विश्व स्तर पर मनाए जाते हैं, विशेष रूप से आश्चर्यजनक खजुराहो स्मारकों के समूह के लिए।
- अभिलेखीय रिकॉर्ड और भूमि अनुदान अक्सर राजस्व संग्रह और प्रशासनिक कमान के लिए क्षेत्रीय सीमाओं को चित्रित करने के लिए इस सटीक शब्द का उपयोग करते हैं।
- यह प्रशासनिक मॉडल प्रारंभिक मध्ययुगीन भारत में विकेंद्रीकृत लेकिन संरचनात्मक रूप से संगठित शासन की निरंतरता को पूरी तरह से प्रदर्शित करता है।

Additional Knowledge

- **एक धार्मिक संप्रदाय:** इस शब्द का धार्मिक या दार्शनिक आंदोलनों से कोई संबंध नहीं है; ऐसे संप्रदायों को आमतौर पर संप्रदाय या पंथ जैसे शब्दों के साथ संदर्भित किया जाता था।
- **एक सैन्य उपाधि:** उच्च रैंकिंग वाले सैन्य खिताबों में सेनापति, महादंडनायक या बलाधिकृत शामिल थे, जो भुक्ति जैसे क्षेत्रीय प्रभागों से अलग थे।
- **एक भू-राजस्व कर:** करों को आमतौर पर भाग, भोग, कर या उदंग जैसे विशिष्ट शब्दों द्वारा निरूपित किया जाता था, हालांकि भोग शब्द भुक्ति के साथ एक भाषाई मूल साझा करता है।

Q7. महाराष्ट्र में, एज ऑफ कंसेंट एक्ट 1891 का विरोध प्रमुख रूप से किसके द्वारा किया गया था?

- (a) गोपाल कृष्ण गोखले
- (b) काशीनाथ त्रयंबक तेलंग
- (c) महादेव गोविंद रानाडे
- (d) बाल गंगाधर तिलक

Ans.(d)

Sol. सही उत्तर (d) है।

बाल गंगाधर तिलक ने 1891 के 'एज ऑफ कंसेंट एक्ट' का सार्वजनिक रूप से पुरजोर विरोध किया। हालाँकि वे सैद्धांतिक रूप से इस सुधार के विरुद्ध नहीं थे, लेकिन उन्होंने उस बात का कड़ा विरोध किया जिसे वे निजी हिंदू घरेलू और धार्मिक मामलों में ब्रिटिश औपनिवेशिक हस्तक्षेप मानते थे।

Information Booster

- 1891 के एज ऑफ कंसेंट एक्ट को मूल रूप से पारसी समाज सुधारक बेहरामजी मालाबारी द्वारा प्रस्तावित किया गया था और इसके लिए आक्रामक अभियान चलाया गया था।
- इसका उद्देश्य सभी लड़कियों के लिए, चाहे वे विवाहित हों या अविवाहित, संभोग के लिए सहमति की कानूनी आयु 10 से बढ़ाकर 12 वर्ष करना था।
- तिलक ने विधेयक के खिलाफ एक विशाल, भावनात्मक राष्ट्रवादी अभियान चलाने के लिए अपने बेहद लोकप्रिय समाचार पत्रों, केसरी (मराठी) और मराठा (अंग्रेजी) का प्रभावी ढंग से उपयोग किया।
- उन्होंने भावुकता से तर्क दिया कि आवश्यक सामाजिक सुधार शिक्षित भारतीयों द्वारा स्वयं स्वाभाविक रूप से प्रारंभ किए जाने चाहिए, न कि किसी विदेशी, ईसाई सरकार द्वारा विधायी रूप से निर्देशित।
- इस बड़े विवाद ने महाराष्ट्र में उदारवादी समाज सुधारकों (जैसे अगर्कर और रानाडे) और राजनीतिक कट्टरपंथियों (तिलक के नेतृत्व में) के बीच एक तीव्र, स्थायी वैचारिक विभाजन पैदा किया।
- व्यापक आंदोलन ने तिलक की सार्वजनिक छवि को हिंदू रूढ़िवादिता के प्राथमिक, अडिग रक्षक के रूप में महत्वपूर्ण रूप से मजबूत किया और उन्हें एक सच्चे जन राजनीतिक नेता के रूप में स्थापित किया।

Additional Knowledge

- **A (गोपाल कृष्ण गोखले):** एक प्रमुख उदारवादी नेता जो आम तौर पर क्रमिक सामाजिक सुधारों और संवैधानिक तरीकों का समर्थन करते थे। वे विधेयक की प्रगतिशील प्रकृति के बिल्कुल विरोधी नहीं थे।
- **B (काशीनाथ त्रयंबक तेलंग):** प्रार्थना समाज से जुड़े एक उदारवादी समाज सुधारक, जिन्होंने सामाजिक सुधार और महिलाओं के अधिकारों के लिए कानून का सक्रिय समर्थन किया।
- **C (महादेव गोविंद रानाडे):** महाराष्ट्र में राज्य-प्रायोजित सामाजिक सुधार के पूर्णतः सबसे प्रमुख समर्थक। उन्होंने 'एज ऑफ कंसेंट एक्ट' का सक्रिय और पुरजोर समर्थन किया, जिससे वे तिलक के साथ सीधे, कड़वे वैचारिक संघर्ष में आ गए।

Q8. निकोलो कोर्टी ने विजयनगर साम्राज्य का वर्णन किस प्रकार किया:

- (a) एक छोटा धार्मिक शहर
- (b) कमजोर सुरक्षा वाला शहर
- (c) मजबूत सेना वाला एक विशाल और शक्तिशाली शहर
- (d) एक पतनशील साम्राज्य

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर है (c)।

निकोलो कॉंटी, एक चौकस इतालवी व्यापारी और यात्री, जिसने देवराय प्रथम के शासनकाल के दौरान 1420 ईस्वी के आसपास विजयनगर साम्राज्य का दौरा किया था, ने राजधानी को एक विशाल, अविश्वसनीय रूप से धनी और शक्तिशाली शहर के रूप में वर्णित किया, जिसमें दुर्जेय किलेबंदी और एक विशाल स्थायी सेना थी, जो कमजोरी की किसी भी धारणा का पूरी तरह से खंडन करती थी।

Information Booster

- कॉंटी ने विस्मय के साथ उल्लेख किया कि शहर की परिधि लगभग साठ मील थी, जो इसके विशाल और अद्वितीय शहरी फैलाव को उजागर करती है।
- उन्होंने आसपास के ऊबड़-खाबड़, पहाड़ी भूगोल के साथ शहर की विशाल साइक्लोपियन पत्थर की दीवारों के शानदार एकीकरण का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया।
- उन्होंने यह बताकर राज्य की चौंका देने वाली सैन्य शक्ति का मात्रात्मक अनुमान लगाया कि हथियार उठाने के लिए नब्बे हजार लोग फिट थे।
- कॉंटी ने अत्यधिक मूल्यवान सामाजिक-सांस्कृतिक अवलोकन प्रदान किए, जिसमें महानवमी, दीपावली जैसे त्योहारों का भव्य उत्सव और सती जैसी सामाजिक प्रथाओं का प्रचलन शामिल है।
- उन्होंने साम्राज्य के हलचल भरे, महानगरीय बाजारों में काम कर रहे एक अत्यधिक संगठित सिक्का प्रणाली के अस्तित्व पर भी ध्यान दिया।
- उनके खाते विजयनगर के 15वीं सदी की शुरुआत के चरम के पुनर्निर्माण के लिए सबसे महत्वपूर्ण यूरोपीय प्राथमिक स्रोतों में से एक बने हुए हैं।

Additional Knowledge

- **एक छोटा धार्मिक शहर:** विजयनगर वास्तव में एक अत्यधिक पवित्र केंद्र था, लेकिन कॉंटी इसके महानगरीय, वाणिज्यिक और शाही पैमाने से अभिभूत थे, न कि केवल इसके धार्मिक पहलुओं से।
- **कमजोर सुरक्षा वाला शहर:** उनकी घाटियों को पूरी तरह से पहाड़ों तक घेरने वाली विशाल दीवारों का वर्णन स्पष्ट रूप से एक अभेद्य, अत्यधिक किलेबंद मध्ययुगीन राजधानी का विवरण देता है।
- **एक पतनशील साम्राज्य:** कॉंटी ने देवराय प्रथम के तहत तेजी से आरोही संगम राजवंश के दौरान दौरा किया, जो आक्रामक विस्तार, सैन्य आधुनिकीकरण और समेकन की अवधि थी, न कि पतन की।

Q9. तंत्रालोक ग्रंथ के लेखक कौन हैं?

- (a) अभिनवगुप्त
- (b) राजशेखर
- (c) गोविंदस्वामी
- (d) आदि शंकराचार्य

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर है (a)।

तंत्रालोक 10वीं शताब्दी के शानदार कश्मीरी दार्शनिक और रहस्यवादी अभिनवगुप्त द्वारा लिखित एक दार्शनिक उत्कृष्ट कृति है। यह कश्मीर शैव धर्म की त्रिक प्रणाली का एक अविश्वसनीय रूप से व्यापक संश्लेषण है, जो इसके दार्शनिक सिद्धांतों, गूढ़ अनुष्ठानों और ध्यान प्रथाओं का सावधानीपूर्वक विवरण देता है।

Information Booster

- अभिनवगुप्त एक अद्वितीय बहुश्रुत थे जिन्होंने प्राचीन भारत में दर्शन, सौंदर्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना में गहरा और स्थायी योगदान दिया।
- तंत्रालोक का शाब्दिक अर्थ है तंत्र पर प्रकाश डालना और इसे व्यवस्थित रूप से 37 विशाल अध्यायों में विभाजित किया गया है।
- उन्होंने शैव धर्म के विभिन्न द्वैतवादी और अद्वैतवादी स्कूलों को एक सामंजस्यपूर्ण, मूल रूप से अद्वैतवादी ढांचे में सफलतापूर्वक संश्लेषित किया जिसे प्रत्यभिज्ञा के रूप में जाना जाता है।
- गहन दर्शन से परे, वे भरत मुनि के नाट्य शास्त्र पर अपनी आधिकारिक टिप्पणी अभिनवभारती के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध हैं।
- उन्होंने शास्त्रीय रस सिद्धांत को गहराई से विस्तृत किया, विशेष रूप से शांत रस को परम और सर्वोच्च सौंदर्य अनुभव के रूप में पेश और स्थापित किया।
- उनके कार्य निस्संदेह मध्ययुगीन कश्मीरी छात्रवृत्ति के शुद्ध बौद्धिक शिखर का प्रतिनिधित्व करते हैं।

Additional Knowledge

- **राजशेखर:** 10वीं शताब्दी के एक प्रख्यात संस्कृत कवि और नाटककार, जो कर्पूरमंजरी और काव्यमीमांसा जैसी कृतियों के लिए प्रसिद्ध हैं, जिन्हें शक्तिशाली गुर्जर-प्रतिहारों द्वारा संरक्षण प्राप्त था।
- **गोविंदस्वामी:** बौधायन धर्मसूत्र के एक प्रमुख प्रारंभिक मध्यकालीन टिप्पणीकार और एक प्राचीन भारतीय गणितज्ञ, जिनका कश्मीर शैव धर्म के दर्शन से कोई संबंध नहीं है।
- **आदि शंकराचार्य:** महान 8वीं शताब्दी के दार्शनिक जिन्होंने अद्वैत वेदांत के रूढ़िवादी सिद्धांत को समेकित किया और उपनिषदों और ब्रह्म सूत्रों पर प्रमुख टिप्पणियां लिखीं, न कि तांत्रिक तंत्रालोक।

Q10. निम्नलिखित में से कौन सा शब्द बौद्ध मठवासी जीवन में प्रारंभिक प्रवेश के समारोह को दर्शाता है?

- (a) उपसंपदा
- (b) प्रव्रज्या
- (c) सप्तपदी
- (d) दीक्षा

Ans.(b)

Sol. Explanation:

सही उत्तर है (b)।

बौद्ध मठवासी परंपरा में, "प्रव्रज्या" का शाब्दिक अर्थ है "आगे जाना"। यह सुरक्षित रूप से उस प्रारंभिक समारोह को चिह्नित करता है जहाँ एक आम आदमी सांसारिक जीवन का त्याग करता है, घर छोड़ देता है, और औपचारिक रूप से बौद्ध संघ में एक नौसिखिया भिक्षु या नन के रूप में दीक्षित होता है।

Information Booster:

- प्रव्रज्या ग्रहण करने के लिए, व्यक्ति की आयु आमतौर पर कम से कम 8 वर्ष होनी चाहिए।
- समारोह के दौरान, उम्मीदवार अपना सिर पूरी तरह से मुंडवाता है, गेरुआ वस्त्र धारण करता है, और "त्रिशरण" का पाठ करता है: बुद्ध, धर्म और संघ की पूर्ण शरण लेना।
- इसके बाद नौसिखिया को दस शिक्षापदों का सख्ती से पालन करना आवश्यक है, जिसमें हत्या, चोरी, झूठ बोलने और धन या सोने को छूने से दूर रहना शामिल है।
- यह प्रारंभिक चरण एक वरिष्ठ भिक्षु के अधीन सख्त प्रशिक्षण और परिवीक्षा की अवधि होती है।
- यह पारिवारिक और सामाजिक बंधनों से पूर्ण विच्छेद और भिक्षावृत्ति का जीवन अपनाने का प्रतिनिधित्व करता है।
- कुछ बीमारियों से पीड़ित व्यक्तियों, कर्जदारों और शाही सैनिकों को आमतौर पर संघ की शुद्धता बनाए रखने और राज्य के साथ संघर्ष से बचने के लिए प्रव्रज्या से प्रतिबंधित किया गया था।

Additional Knowledge:

- **उपसंपदा:** यह उच्च दीक्षा समारोह है जो एक नौसिखिया को पूर्ण मठवासी दर्जा प्रदान करता है। यह केवल 20 वर्ष की परिपक्व आयु तक पहुँचने के बाद ही लिया जा सकता है।
- **सप्तपदी:** एक पारंपरिक हिंदू विवाह अनुष्ठान जिसमें पवित्र अग्नि के चारों ओर सात फेरे लिए जाते हैं, जो बौद्ध मठवाद से पूरी तरह से असंबद्ध है।
- **दीक्षा:** गुरु द्वारा दीक्षा के लिए एक सामान्य हिंदू या जैन शब्द है, लेकिन 'प्रव्रज्या' बौद्ध विनय पिटक में उपयोग किया जाने वाला विशिष्ट शब्द है।

Q11. किसने सुझाव दिया था कि भारत की स्वतंत्रता की मांग को असहयोग आंदोलन के आधारों में से एक के रूप में शामिल किया जाना चाहिए?

- (a) मोतीलाल नेहरू
- (b) सी. राजगोपालाचारी
- (c) विजयाराघवाचारी
- (d) सुभाष चंद्र बोस

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर (c) है।

असहयोग आंदोलन शुरू में महात्मा गांधी द्वारा 1920 में मुख्य रूप से पंजाब की गलतियों (जलियांवाला बाग) और खिलाफत मुद्दे के निवारण के लिए शुरू किया गया था। स्वशासन (स्वराज) की औपचारिक मांग को शामिल करने के लिए वैचारिक विस्तार महत्वपूर्ण सत्रों के दौरान वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं द्वारा आगे बढ़ाया गया था।

Information Booster

- सी. विजयाराघवाचारी एक अनुभवी कांग्रेस नेता और प्रखर राष्ट्रवादी थे।
- उन्होंने दिसंबर 1920 में नागपुर में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ऐतिहासिक वार्षिक सत्र की अध्यक्षता की थी।
- इसी नागपुर सत्र में असहयोग प्रस्ताव, जिसे पहले विशेष कलकत्ता सत्र में तैयार किया गया था, की पुष्टि की गई और कांग्रेस के सिद्धांत को मौलिक रूप से बदल दिया गया।
- विजयाराघवाचारी ने दृढ़ता से वकालत की कि स्वराज (स्वतंत्रता/स्वशासन) की प्राप्ति को खिलाफत और पंजाब के मुद्दों के साथ आंदोलन के अंतिम लक्ष्य और प्राथमिक आधार के रूप में स्पष्ट रूप से बताया जाना चाहिए।
- कांग्रेस ने आधिकारिक तौर पर "शांतिपूर्ण और वैध तरीकों से स्वराज की प्राप्ति" के लक्ष्य को अपनाया।

Additional Knowledge

- विकल्प A (मोतीलाल नेहरू) कलकत्ता में प्रस्ताव पारित करने में सहायक थे और बाद में आंदोलन के लिए अपनी वकालत छोड़ दी, लेकिन उन्होंने महत्वपूर्ण नागपुर परिवर्धन की अध्यक्षता नहीं की।
- विकल्प B (सी. राजगोपालाचारी) एक कट्टर गांधीवादी थे जिन्होंने मद्रास प्रेसीडेंसी में आंदोलन को भारी रूप से संगठित किया था, लेकिन वे नागपुर अध्यक्षता में स्वराज समावेशन खंड के प्रवर्तक नहीं थे।
- विकल्प D (सुभाष चंद्र बोस) एक युवा नेता थे जिन्होंने सी.आर. दास के तहत 1921 में आंदोलन में शामिल होने के लिए ICS से इस्तीफा दे दिया था; वे इस समय कांग्रेस के केंद्रीय सिद्धांत को निर्देशित करने के लिए बहुत कनिष्ठ थे।

Q12. प्रारंभिक भारतीय राष्ट्रवाद के उदारवादी नेताओं ने इस आधार पर किस संस्था के उन्मूलन की मांग की कि उसने भारत में उदार नीतिगत पहलों को अवरुद्ध किया?

- इंडिया ऑफिस
- काउंसिल ऑफ इंडिया
- गवर्नर-जनरल की कार्यकारी परिषद
- फोर्ट विलियम

Ans.(b)

Sol. सही उत्तर (b) है।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रारंभिक उदारवादी नेताओं ने 'काउंसिल ऑफ इंडिया' को खत्म करने की पुरजोर मांग की, यह तर्क देते हुए कि यह सेवानिवृत्त ब्रिटिश अधिकारियों का एक प्रतिक्रियावादी, अविश्वसनीय रूप से महंगा निकाय था जो भारत में किसी भी प्रगतिशील या उदार नीतियों को सक्रिय रूप से अवरुद्ध करता था।

Information Booster

- काउंसिल ऑफ इंडिया की स्थापना भारत सरकार अधिनियम 1858 द्वारा लंदन में विशेष रूप से भारत सचिव (Secretary of State for India) की सहायता और सलाह देने के लिए की गई थी।
- इसमें मूल रूप से 15 सदस्य शामिल थे, जिनमें ज्यादातर सेवानिवृत्त, अत्यधिक रूढ़िवादी ब्रिटिश नागरिक या सैन्य अधिकारी थे जिन्होंने पहले भारत में सेवा की थी।
- उदारवादियों (जैसे दादाभाई नौरोजी और गोखले) ने परिषद की एक 'विशाल', अप्रचलित और पूरी तरह से अनुत्तरदायी संस्था के रूप में तीखी आलोचना की।
- उन्होंने पुरजोर तर्क दिया कि इसके सदस्य भारत की बदलती, आधुनिक वास्तविकताओं से अलग थे और उनमें गहरी रूढ़िवादी, साम्राज्यवादी पूर्वाग्रह थे जो सुधारों का गला घोटते थे।
- इसके अलावा, भारत सचिव और इस पूरी परिषद के भारी वेतन और शानदार खर्चों को अन्यायपूर्ण रूप से सीधे भारतीय राजस्व (कुख्यात 'होम चार्ज' का हिस्सा) पर थोपा गया था।
- प्रारंभिक कांग्रेस सत्रों में इसके पूर्ण उन्मूलन की मांग एक आवर्ती, प्रमुख प्रस्ताव था, जिसका उद्देश्य भारत सचिव को सीधे ब्रिटिश संसद के प्रति उत्तरदायी बनाना था।

Additional Knowledge

- **A (इंडिया ऑफिस):** हालाँकि वे इस बात में सुधार चाहते थे कि इंडिया ऑफिस को कैसे वित्त पोषित किया जाए (ब्रिटिश राजकोष द्वारा इसके भुगतान की मांग करते हुए), लेकिन वे जिस विशिष्ट संस्थागत निकाय को पूरी तरह से *उन्मूलन* करना चाहते थे, वह सलाहकार परिषद थी।
- **C (गवर्नर-जनरल की कार्यकारी परिषद):** उदारवादियों ने निश्चित रूप से इसके उन्मूलन की मांग नहीं की थी; बल्कि, उन्होंने घरेलू प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए इसके व्यापक विस्तार और भारतीय सदस्यों को शामिल करने की मांग की थी।
- **D (फोर्ट विलियम):** यह केवल बंगाल प्रेसीडेंसी (कलकत्ता) का भौगोलिक मुख्यालय था; इस संवैधानिक संदर्भ में किले को खत्म करने का कोई राजनीतिक अर्थ नहीं है।

Q13. 1897 में चापेकर भाइयों द्वारा डब्ल्यू. सी. रैंड की हत्या तब हुई जब ब्रिटिश अधिकारी किस कार्यक्रम के सम्मान में आयोजित समारोह से लौट रहे थे?

- (a) एडवर्ड VII का राज्याभिषेक
- (b) महारानी विक्टोरिया की हीरक जयंती
- (c) 1858 की महारानी विक्टोरिया की उद्घोषणा
- (d) दिल्ली दरबार

Ans.(b)

Sol. Explanation:

सही उत्तर है (b)।

22 जून 1897 को चापेकर भाइयों ने पुणे में डब्ल्यू. सी. रैंड और लेफ्टिनेंट आयर्स्ट की हत्या कर दी। ब्रिटिश अधिकारियों पर उस समय हमला किया गया जब वे महारानी विक्टोरिया के भव्य हीरक जयंती समारोह से लौट रहे थे।

Information Booster:

- डब्ल्यू. सी. रैंड 1897 के विनाशकारी ब्यूबोनिक प्लेग महामारी के दौरान पूना में विशेष प्लेग समिति के कठोर अध्यक्ष थे।
- रैंड के सैनिकों द्वारा लागू किए गए सैन्य-शैली के प्लेग उपाय अत्यधिक असंवेदनशील थे, जिसमें निजी घरों में जबरन प्रवेश और महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार शामिल था।
- इससे महाराष्ट्र में भारी जन आक्रोश पैदा हुआ, जिसे तिलक ने अपने समाचार पत्र केसरी में लेखों के माध्यम से व्यक्त किया।
- दामोदर और बालकृष्ण चापेकर ने इन दमनकारी प्रशासनिक उपायों के खिलाफ प्रतिशोध के रूप में हत्या की योजना बनाई थी।
- यह हत्या हीरक जयंती समारोह के साथ हुई, जो शाही जश्न और भारतीय पीड़ा के बीच के क्रूर अंतर को उजागर करती थी।
- भाइयों को बाद में फांसी दे दी गई और वे उग्र राष्ट्रवादी आंदोलन के शुरुआती शहीद बने।

Additional Knowledge:

- **एडवर्ड VII का राज्याभिषेक:** राजा एडवर्ड VII का राज्याभिषेक 1902 में हुआ था, जो 1897 की घटना के कई साल बाद था।
- **1858 की महारानी विक्टोरिया की उद्घोषणा:** यह घटना दशकों पहले हुई थी, जब सत्ता ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश क्राउन को हस्तांतरित हुई थी।
- **दिल्ली दरबार:** प्रमुख दिल्ली दरबार 1877, 1903 और 1911 में आयोजित किए गए थे, जो 1897 की हत्या के साथ मेल नहीं खाते हैं।

Q14. ताण्ड्य-महा-ब्राह्मण को किस रूप में भी जाना जाता है:

- ऐतरेय ब्राह्मण
- पंचविंश ब्राह्मण
- शतपथ ब्राह्मण
- गोपथ ब्राह्मण

Ans.(b)

Sol. सही उत्तर है (b)।

ताण्ड्य-महा-ब्राह्मण पंचविंश ब्राह्मण के रूप में भी प्रसिद्ध है। यह इस सटीक वैकल्पिक नाम को अर्जित करता है क्योंकि इसमें संरचनात्मक रूप से ठीक पच्चीस अध्याय होते हैं। यह सामवेद से संबद्ध सबसे पुराने, सबसे बड़े और सबसे महत्वपूर्ण ब्राह्मणों में से एक है।

Information Booster

- यह पाठ श्रौत यज्ञों का अत्यधिक विस्तृत और तकनीकी विवरण प्रदान करता है, विशेष रूप से उद्गाता पुजारी के जप कर्तव्यों का विवरण देता है।
- इसमें महत्वपूर्ण व्रात्यस्तोम अनुष्ठान शामिल है, जो एक उल्लेखनीय सामाजिक-धार्मिक समारोह था जिसे कर्मकांडीय रूप से शुद्ध करने और गैर-वैदिक व्रात्यों को रूढ़िवादी वैदिक आर्य तह में आत्मसात करने के लिए डिज़ाइन किया गया था।
- यह पौराणिक सरस्वती और दृषद्वती नदी यज्ञों का विवरण देता है, जो प्रारंभिक वैदिक लोगों के भौगोलिक बदलावों पर भारी प्रकाश डालता है।
- यह पाठ अपने जातिगत भेदों में विशेष रूप से कठोर है, जो बाद के वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था के सख्त होने को गहराई से दर्शाता है।
- इसमें नैमिषारण्य जंगल के महत्वपूर्ण पाठ्य संदर्भ भी शामिल हैं, जो प्राचीन वैदिक छात्रवृत्ति का एक प्रमुख केंद्र है।
- षडविंश ब्राह्मण को संरचनात्मक रूप से इस विशाल पाठ के बाद के परिशिष्ट या निरंतरता के रूप में माना जाता है।

Additional Knowledge

- **ऐतरेय ब्राह्मण:** यह सख्ती से ऋग्वेद से संबद्ध है और शुनःशेष की कहानी और शाही अभिषेक समारोहों पर विस्तृत विवरण के लिए प्रसिद्ध है।
- **शतपथ ब्राह्मण:** शुक्ल यजुर्वेद से संबद्ध सबसे विशाल ब्राह्मण, जिसमें 100 अध्याय शामिल हैं और कृषि अनुष्ठानों और महान बाढ़ की कथा का विवरण है।
- **गोपथ ब्राह्मण:** अथर्ववेद से जुड़ा एकमात्र मौजूदा ब्राह्मण, जो ब्रह्मा पुजारी की सर्वोच्च पर्यवेक्षी भूमिका का भारी महिमामंडन करता है।

Q15. उत्तर वैदिक काल में 'तक्षण' थे:

- (a) सुनार
- (b) बढई
- (c) पुजारी
- (d) योद्धा

Ans.(b)

Sol. Explanation:

सही उत्तर है (b)।

उत्तर वैदिक काल में, 'तक्षण' शब्द विशेष रूप से एक बढई को संदर्भित करता था। जैसे-जैसे आर्यों ने अर्ध-खानाबदोश देहाती जीवन से बसे हुए कृषि जीवन में प्रवेश किया, मकानों, रथों और कृषि उपकरणों के निर्माण के लिए तक्षण जैसे विशिष्ट शिल्पकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई।

Information Booster:

- उत्तर वैदिक ग्रंथ अर्थव्यवस्था में तेजी से बढ़ती जटिलता को उजागर करते हैं जिसमें कई विशिष्ट शिल्प शामिल थे।
- शुरुआती समाज में तक्षण का दर्जा काफी सम्मानजनक था क्योंकि रथ निर्माण और उन्नत लकड़ी का काम युद्ध और दैनिक जीवन दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था।
- ग्रंथों में अक्सर उल्लेखित अन्य महत्वपूर्ण शिल्पकार वर्गों में कर्मार और कुलाल शामिल हैं।
- इस अवधि के दौरान लौह प्रौद्योगिकी के क्रांतिकारी उद्भव ने कर्मार और तक्षण के संयुक्त कौशल पर भारी निर्भरता दिखाई।
- इस काल में शिल्पों के स्थानीयकरण की निश्चित शुरुआत देखी गई, जो बाद के महाजनपद युग में शक्तिशाली विशिष्ट श्रेणियों में विकसित हुए।
- श्रम का कठोर विभाजन अधिक स्पष्ट हो रहा था, जिसने दूसरे शहरीकरण के लिए सामाजिक-आर्थिक आधार तैयार किया।

Additional Knowledge:

- **सुनार:** वैदिक शब्दावली में, सोने के काम करने वाले को हिरण्यकार कहा जाता था, जो निष्क जैसे आभूषणों की विशिष्ट मांग को दर्शाता है।
- **पुजारी:** पुजारियों को आम तौर पर ब्राह्मण कहा जाता था, जिनकी होत्री, उद्गातार और अध्वर्यु जैसी अत्यधिक विशिष्ट अनुष्ठानिक भूमिकाएँ होती थीं।
- **योद्धा:** योद्धा वर्ग को राजन्य या क्षत्रिय के रूप में नामित किया गया था, जो संरचनात्मक रूप से सुरक्षा और प्रशासन के लिए जिम्मेदार थे।

Q16. स्वच्छंदतावादी इतिहासकार इतिहास को मानते थे:

- (a) बिना पैटर्न वाली यादृच्छिक घटनाएँ
- (b) एक ईश्वरीय हस्तक्षेप
- (c) मानव जाति के विकास या प्रगति की एक प्रक्रिया
- (d) केवल राजनीतिक घटनाएँ

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर है (c)।

स्वच्छंदतावादी इतिहासलेखन 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 19वीं शताब्दी की शुरुआत में प्रबोधन के ठंडे, यांत्रिक तर्कवाद के खिलाफ एक प्रतिक्रिया के रूप में उभरा। इसने अतीत को समझने के तरीके को नया आकार दिया, इसे तथ्यों की एक मात्र सूची के बजाय एक जीवंत इकाई के रूप में देखा।

Information Booster

- स्वच्छंदतावादी इतिहासकारों ने इतिहास को जैविक रूप से देखा, यह मानते हुए कि मानव समाज जीवित जीवों की तरह बढ़ते और विकसित होते हैं।

- उन्होंने इतिहास को मानव जाति के विकास और आध्यात्मिक प्रगति की एक निरंतर, गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखा।
- प्रबोधन विचारकों के विपरीत, जिन्होंने तर्क के सार्वभौमिक मानकों द्वारा अतीत का न्याय किया, स्वच्छंदतावादियों ने प्रत्येक ऐतिहासिक युग को उसकी अपनी अनूठी भावना और मानव विकास में योगदान के लिए महत्व दिया।
- उन्होंने राष्ट्रों की नियति को आकार देने में भावना, राष्ट्रवाद, लोक परंपराओं और वीर व्यक्तियों के कार्यों का उत्सव मनाया।
- इस दिशा में प्रमुख विचारकों में जोहान गॉटफ्रीड हर्डर और जूल्स मिशेलेट शामिल थे।

Additional Knowledge

- विकल्प A गलत है क्योंकि स्वच्छंदतावादी इतिहासकार अंतर्निहित पैटर्न—विशेष रूप से जैविक विकास और राष्ट्रीय नियति के प्रकटीकरण—में दृढ़ विश्वास रखते थे, न कि यादृच्छिक अराजकता में।
- विकल्प B इतिहास के मध्यकालीन, धार्मिक दृष्टिकोण (ईश्वरीय इतिहास) का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे स्वच्छंदतावादी आगे बढ़ चुके थे, इसके बजाय मानव सांस्कृतिक और राष्ट्रीय भावना पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे।
- विकल्प D पारंपरिक प्रत्यक्षवादी या "रैंकेयन" इतिहास (ऊपर से इतिहास) के संकीर्ण दायरे का वर्णन करता है, जबकि स्वच्छंदतावादियों ने संस्कृति, साहित्य और आम लोगों की भावना को सक्रिय रूप से अपनाया।

Q17. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें

A. हिंदू पॉलिटी	I. आर.सी. मजूमदार
B. कॉर्पोरेट लाइफ इन एंशियंट इंडिया	II. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव
C. द मुगल एंपायर (1526-1803 ई.)	III. के.एस. लाल
D. द हिस्ट्री ऑफ खिलजीस (1290-1320)	IV. के.पी. जायसवाल

- (A). A-I, B-II, C-III, D-IV
 (b) A-II, B-I, C-III, D-IV
 (c) A-IV, B-I, C-III, D-II
 (d) A-IV, B-I, C-II, D-III

Ans.(d)

Sol. सही उत्तर (d) है।

यह प्रश्न प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय इतिहास के मानक इतिहासलेखन ग्रंथों के साथ परिचितता का परीक्षण करता है। ये लेखक मौलिक हस्तियाँ हैं जिन्होंने भारत में 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धतियों को आकार दिया।

Information Booster

- के.पी. जायसवाल (A-IV) ने अत्यंत प्रभावशाली राष्ट्रवादी ग्रंथ "हिंदू पॉलिटी" (1924) लिखा, जहाँ उन्होंने प्राचीन भारतीय गणराज्यों और संवैधानिक तत्वों पर प्रकाश डालकर प्राच्य निरंकुशता के औपनिवेशिक दावों के खिलाफ तर्क दिया।

- आर.सी. मजूमदार (B-I) ने "कॉरपोरेट लाइफ इन एंशियंट इंडिया" (1918) लिखी, जो प्रारंभिक भारत में श्रेणियों, स्थानीय सभाओं और लोकतांत्रिक संस्थानों के अस्तित्व पर एक अग्रणी अध्ययन था।
- आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव (C-II) मध्यकालीन भारत के एक प्रख्यात इतिहासकार थे जिनकी व्यापक पाठ्यपुस्तक, "द मुगल एम्पायर", छात्रों के लिए एक प्रमुख स्रोत बनी हुई है।
- के.एस. लाल (D-III) ने "हिस्ट्री ऑफ द खलजीस" (1950) की रचना की, जो अलाउद्दीन खलजी की विस्तारवादी नीतियों और आर्थिक सुधारों का विस्तृत, आलोचनात्मक विश्लेषण प्रदान करती है।

Additional Knowledge

- विकल्प A पूरी तरह से बेमेल है, जो जायसवाल की राष्ट्रवादी महान कृति को मजूमदार को गलत तरीके से सौंपता है, और मध्यकालीन इतिहास के विद्वानों को मिला देता है।
- विकल्प B गलत तरीके से "हिंदू पॉलिटी" को ए.एल. श्रीवास्तव को सौंपता है, जिन्होंने प्राचीन राजनीतिक सिद्धांत के बजाय विशेष रूप से मध्यकालीन इस्लामी काल में विशेषज्ञता हासिल की थी।
- विकल्प C प्राचीन इतिहासकारों (A-IV, B-I) को सही पाता है लेकिन मध्यकालीन लेखकों को उलट देता है, गलत तरीके से खलजी के इतिहास को के.एस. लाल के बजाय ए.एल. श्रीवास्तव को जिम्मेदार ठहराता है।

Q18. भारत में ब्रिटिश प्रशासन से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:

- A. लॉर्ड विलियम बेंटिक गवर्नर-जनरल बने
 - B. लॉर्ड डलहौजी गवर्नर-जनरल बने
 - C. अवधि का विलय
 - D. भारत में क्राउन शासन की शुरुआत
- (a) A, B, C, D
(b) B, A, C, D
(c) A, C, B, D
(d) B, C, A, D

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर (a) है।

यह कालानुक्रमिक क्रम उदार सुधारवाद की अवधि से आक्रामक विस्तारवाद की ओर ब्रिटिश संक्रमण का पता लगाता है, जिसका समापन 1857 के विद्रोह के बाद औपनिवेशिक राज्य के पूर्ण संरचनात्मक बदलाव में हुआ।

Information Booster

- लॉर्ड विलियम बेंटिक 1828 (A) में गवर्नर-जनरल बने। उनका कार्यकाल सती प्रथा के उन्मूलन (1829) और ठगी के दमन सहित उदार सुधारों के लिए प्रसिद्ध है। वे 1833 के चार्टर एक्ट के तहत पहले "भारत के गवर्नर-जनरल" बने।
- लॉर्ड डलहौजी ने 1848 (B) में गवर्नर-जनरल का पद ग्रहण किया। उन्होंने विशाल बुनियादी ढांचा परियोजनाओं (रेलवे, टेलीग्राफ) की शुरुआत की और हड़प नीति का उपयोग करके आक्रामक रूप से ब्रिटिश क्षेत्र का विस्तार किया।

- अवध का विलय (C) 1856 में हुआ था। डलहौजी ने "कुशासन" के बहाने नवाब वाजिद अली शाह को पदच्युत कर दिया। इस कृत्य ने भारी असंतोष पैदा किया और यह 1857 के विद्रोह के लिए एक प्रमुख उत्प्रेरक था।
- क्राउन शासन की शुरुआत (D) 1858 में हुई। 1857 के विद्रोह के दमन के बाद, भारत सरकार अधिनियम 1858 ने ईस्ट इंडिया कंपनी को समाप्त कर दिया और सभी शक्तियाँ सीधे ब्रिटिश क्राउन को हस्तांतरित कर दीं।

Additional Knowledge

- विकल्प B गलत तरीके से डलहौजी (1848) को बेंटिक (1828) से पहले रखता है, जो 19वीं शताब्दी की औपनिवेशिक नीति के विकास को बिगाड़ता है।
- विकल्प C गलत तरीके से सुझाव देता है कि डलहौजी के आने (1848) से पहले ही अवध का विलय (1856) हो गया था, जबकि डलहौजी ही उस विलय का वास्तुकार था।
- विकल्प D 19वीं शताब्दी की समयरेखा को पूरी तरह से गड़बड़ कर देता है, यह सुझाव देते हुए कि डलहौजी और अवध का विलय बेंटिक के सुधार युग से पहले हुआ था।

Q19. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन A और दूसरे को कारण R के रूप में लेबल किया गया है

कथन (A): मौर्य राज्य सक्रिय रूप से आर्थिक संसाधनों को नियंत्रित करता था।

कारण (R): इसने अपनी देखरेख में खेतों, वनों और उद्योगों को बनाए रखा।

- (a) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
- (b) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है
- (c) A सही है लेकिन R सही नहीं है
- (d) A सही नहीं है लेकिन R सही है

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर (a) है।

मौर्य साम्राज्य भारतीय इतिहास में पहले अत्यधिक केंद्रीकृत नौकरशाही राज्य का प्रतिनिधित्व करता है। अर्थशास्त्र व्यापक प्रमाण प्रदान करता है कि अर्थव्यवस्था पर राज्य का नियंत्रण पूर्ण, व्यवस्थित और इसके विशाल प्रशासनिक और सैन्य तंत्र को बनाए रखने के लिए आवश्यक था।

Information Booster

- कथन (A) पूरी तरह सत्य है। मौर्य राज्य अनिवार्य रूप से एक बड़े आर्थिक उद्यम के रूप में संचालित होता था, जो कीमतों, व्यापार, वजन और माप को कड़ाई से विनियमित करता था।
- कारण (R) भी सत्य है और कथन की पूरी तरह व्याख्या करता है। राजस्व उत्पन्न करने के लिए राज्य सीधे उत्पादन में लगा हुआ था।
- राजसी भूमि (सीता) का प्रबंधन सीधे सीताध्यक्ष नामक अधिकारी द्वारा किया जाता था।
- राज्य का महत्वपूर्ण संसाधनों, विशेष रूप से खनन और धातु विज्ञान (अकराध्यक्ष द्वारा देखरेख) पर एकाधिकार था, जो हथियार उत्पादन के लिए आवश्यक थे।

- वन संसाधनों को कड़ाई से हाथी वनों (सेना के लिए महत्वपूर्ण) और सामग्री वनों में विभाजित किया गया था, जिनकी सुरक्षा सरकारी अधीक्षकों द्वारा की जाती थी।
- वस्त्र उत्पादन, शराब निर्माण और यहाँ तक कि जुए को भी सरकारी अधिकारियों द्वारा भारी रूप से विनियमित और कर लगाया जाता था।

Additional Knowledge

- विकल्प B गलत है क्योंकि सरकारी खेतों, खानों और उद्योगों को बनाए रखना ही वह सटीक रसद तंत्र (कारण) है जिसके द्वारा मौर्य प्रशासन ने व्यापक आर्थिक संसाधनों (कथन) को सक्रिय रूप से नियंत्रित किया।
- विकल्प C गलत है क्योंकि यह गलत दावा करता है कि मौर्य राज्य ने आर्थिक क्षेत्रों पर प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण नहीं रखा, जो कौटिल्य के प्रमाणों के विपरीत है।
- विकल्प D गलत है क्योंकि यह कथन कि राज्य अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करता था, मौर्य राजनीति के संबंध में एक स्थापित ऐतिहासिक तथ्य है।

Q20. निम्नलिखित राजवंशों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें (सबसे पहले से नवीनतम):

- A. इक्ष्वाकु
- B. बोधि
- C. आभीर
- D. महामेघवाहन

- (a) A, C, B, D
- (b) C, B, A, D
- (c) A, D, B, C
- (d) D, C, B, A

Ans.(d)

Sol. सही उत्तर (d) है।

इन प्रारंभिक भारतीय राजवंशों का कालानुक्रमिक उत्तराधिकार मौर्य और सातवाहन साम्राज्यों के पतन के बाद क्षेत्रीय राज्य संरचनाओं को दर्शाता है। महामेघवाहन पहले कलिंग में उभरे, उसके बाद सदियों बाद आभीर, बोधि और अंत में इक्ष्वाकु आए।

Information Booster

- महामेघवाहन राजवंश सबसे पुराना है, जो 1 शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान कलिंग (आधुनिक ओडिशा) में प्रमुखता से आया था।
- राजा खारवेल इसके सबसे प्रसिद्ध शासक हैं, जिन्हें हाथीगुम्फा शिलालेख से विस्तार से जाना जाता है।
- आभीर राजवंश 3 शताब्दी ईस्वी की शुरुआत में सातवाहनों के उत्तराधिकारी के रूप में पश्चिमी दक्कन में सत्ता में आया।
- बोधि राजवंश ने 2 और 3 शताब्दी ईस्वी के आसपास मध्य भारत के त्रिपुरी क्षेत्र पर शासन किया।

- विजयपुरी (आंध्र प्रदेश) के इक्ष्वाकु राजवंश ने 3 शताब्दी ईस्वी के मध्य से उत्तरार्ध के दौरान कृष्णा-गुंटूर क्षेत्र पर शासन किया।
- इन राजवंशों ने क्षेत्रीय कला, वास्तुकला और धर्म के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे भारत शास्त्रीय युग में परिवर्तित हुआ।

Additional Knowledge

- विकल्प A गलत तरीके से इक्ष्वाकुओं को सबसे पुराने राजवंश के रूप में रखता है, जो स्थापित उत्तर-मौर्य कालक्रम को मौलिक रूप से बाधित करता है।
- विकल्प B गलत तरीके से आभीरों को महामेघवाहनों से पहले रखता है, जो कलिंग शासकों की ईसा पूर्व उत्पत्ति की अनदेखी करता है।
- विकल्प C गलती से इक्ष्वाकुओं को महामेघवाहनों से पहले रखता है, जो उत्तर-सातवाहन काल को पहले के उत्तर-मौर्य काल के साथ भ्रमित करता है।

Q21. सामवेद के भजनों को किन पुजारियों द्वारा गाया जाता था:

- (a) होत्री
- (b) अध्वर्यु
- (c) उद्गाता
- (d) ब्रह्मा

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर है (c)।

विस्तृत वैदिक यज्ञों के दौरान, सामवेद के भजनों को, जो मुख्य रूप से ऋग्वेद से जटिल रूप से प्राप्त संगीत मंत्र हैं, उद्गाता के रूप में जाने जाने वाले पुजारियों की एक अत्यधिक विशिष्ट श्रेणी द्वारा गाया जाता था। देवताओं को ठीक से प्रसन्न करने के लिए उनका सटीक मधुर पाठ आवश्यक माना जाता था।

Information Booster

- सामवेद को ऐतिहासिक रूप से भारतीय शास्त्रीय संगीत का सबसे प्रारंभिक संदर्भ और स्वरों का मूलभूत उद्गम माना जाता है।
- श्रौत अनुष्ठानों की आध्यात्मिक सफलता सुनिश्चित करने के लिए इन जटिल धुनों को सही ढंग से जपना उद्गाता पुजारी का मुख्य और अत्यधिक तकनीकी कर्तव्य था।
- विशाल वैदिक यज्ञ प्रणाली को बिना किसी त्रुटि के मूल रूप से परस्पर जुड़े अनुष्ठानों को करने के लिए विशेष पुजारियों की एक समर्पित टीम की आवश्यकता थी।
- सामवेद के तीन प्रमुख जीवित पाठ्य संस्करण हैं: कौथुम, जैमिनीय और राणायणीय।
- जप में मीटर, उच्चारण और स्वर-शैली का सख्त और अचूक पालन शामिल था, क्योंकि गलतियां दैवीय क्रोध या अनुष्ठान की विफलता को आमंत्रित कर सकती थीं।

- गन्धर्व वेद, जो विशेष रूप से संगीत और प्रदर्शन कलाओं से संबंधित है, को सामवेद से जुड़े उपवेद के रूप में मान्यता प्राप्त है।

Additional Knowledge

- **होत्री:** मुख्य पुजारी जो विशेष रूप से ऋग्वेद से जुड़ा है; उनका सटीक कर्तव्य ऋग्वेद के भजनों का जोर से पाठ करके देवताओं का आह्वान करना था।
- **अध्वर्यु:** यजुर्वेद से जुड़ा महत्वपूर्ण पुजारी; वह वेदी को भौतिक रूप से मापने सहित यज्ञ के भौतिक विवरण और वास्तविक प्रदर्शन के लिए काफी हद तक जिम्मेदार था।
- **ब्रह्मा:** अथर्ववेद से जुड़ा अतिव्यापी पर्यवेक्षण करने वाला पुजारी; उसने शुरू से अंत तक पूरे यज्ञ की देखरेख की और अन्य पुजारियों द्वारा की गई किसी भी गलती को सुधारा।

Q22. कौन सा शिलालेख मौर्य काल के दौरान अकाल का प्रमाण प्रदान करता है?

- (a) जूनागढ़ शिलालेख
- (b) हाथीगुम्फा शिलालेख
- (c) सोहगौरा शिलालेख
- (d) इलाहाबाद शिलालेख

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर है (c)।

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में सुरक्षित रूप से स्थित सोहगौरा ताम्रपत्र शिलालेख, बांग्लादेश में महास्थान शिलालेख के साथ, प्रारंभिक मौर्य काल के दौरान राज्य द्वारा किए गए अत्यधिक संगठित अकाल राहत उपायों का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रमाण प्रदान करता है।

Information Booster

- सोहगौरा शिलालेख स्पष्ट रूप से प्रारंभिक ब्राह्मी लिपि का उपयोग करके प्राकृत भाषा में लिखा गया है।
- यह अत्यंत दुर्लभ पूर्व-अशोक या प्रारंभिक मौर्य शिलालेखों में से एक है जो कोई शाही फरमान नहीं है बल्कि एक कार्यात्मक प्रशासनिक आदेश है।
- यह विशेष रूप से गंभीर संकट या अकाल के समय उपयोग किए जाने वाले दो बड़े भंडारगृहों की स्थापना का स्पष्ट रूप से उल्लेख करता है।
- यह ठोस अभिलेखीय साक्ष्य चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल के दौरान एक बड़े पैमाने पर, विनाशकारी 12-वर्षीय अकाल के संबंध में बहुत बाद की जैन साहित्यिक परंपरा की पूरी तरह से पुष्टि करता है।
- यह शासन और संगठित कल्याण प्रशासन के प्रति मौर्य राज्य के अत्यधिक पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण को शानदार ढंग से उजागर करता है।
- महास्थान शिलालेख आपातकालीन अकाल राहत के संबंध में पुंड्रनगर के महामात्र को बहुत समान प्रशासनिक निर्देश जारी करता है।

Additional Knowledge

- **जूनागढ़ शिलालेख:** बाद में शक शासक रुद्रदामन प्रथम द्वारा जारी किया गया, यह शुद्ध संस्कृत में सबसे पहला लंबा शिलालेख होने के लिए अविश्वसनीय रूप से प्रसिद्ध है और महत्वपूर्ण सुदर्शन झील की मरम्मत का विवरण देता है।
- **हाथीगुम्फा शिलालेख:** कलिंग के राजा खारवेल का एक प्राकृत शिलालेख जो उनके व्यापक सैन्य अभियानों और सार्वजनिक कार्यों का विवरण देता है, जिसमें मौर्य अकालों का बिल्कुल भी उल्लेख नहीं है।
- **इलाहाबाद शिलालेख:** कवि हरिषेण द्वारा रचित, यह एक शानदार स्तुति है जो गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त की व्यापक अखिल भारतीय विजय का विवरण देती है।

Q23. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें

A. बसावन	I. अकबर का दरबारी चित्रकार
B. मंसूर	II. पक्षियों और जानवरों के चित्र बनाने के लिए प्रसिद्ध
C. मीर सैय्यद अली	III. हुमायूँ के अधीन प्रारंभिक मुगल चित्रकला
D. दसवंत	IV. अकबर के चित्रशाला में प्रमुख कलाकार

- (A). A-I, B-II, C-III, D-IV
(b) A-II, B-III, C-I, D-IV
(c) A-III, B-I, C-II, D-IV
(d) A-I, B-IV, C-II, D-III

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर है (a)।

यह क्रम अविश्वसनीय रूप से प्रमुख मुगल चित्रकारों को उनकी विशिष्ट ऐतिहासिक विशेषताओं और कालानुक्रमिक अवधियों के साथ सही ढंग से मेल खाता है। बसावन अकबर के दरबार में एक बहुमुखी उस्ताद थे, मंसूर जहाँगीर के प्रसिद्ध प्राकृतिक इतिहास के चित्रकार थे, मीर सैय्यद अली हुमायूँ द्वारा लाए गए एक प्रारंभिक उस्ताद थे, और दसवंत अकबर की चित्रशाला में एक दुखद प्रतिभाशाली व्यक्ति थे।

Information Booster

- **बसावन:** अकबर के जीवन्त शासनकाल के दौरान प्रसिद्ध, उन्हें अबुल फज़ल द्वारा पृष्ठभूमि को चित्रित करने, विशेषताओं को खींचने में उनकी पूर्ण महारत और फोरशॉर्टनिंग की यूरोपीय तकनीक के अभिनव उपयोग के लिए प्रसिद्ध रूप से सराहा गया था।
- **मंसूर:** निस्संदेह जहाँगीर के अधीन वनस्पतियों और जीवों के सबसे उत्कृष्ट चित्रकार। उन्हें प्रतिष्ठित उपाधि 'नादिर-उल-अस' से सम्मानित किया गया था और वे साइबेरियन क्रैन और डोडो की अपनी निर्दोष पेंटिंग के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध हैं।

- **मीर सैय्यद अली:** अब्दुस समद के साथ, उन्हें निर्वासित हुमायूँ द्वारा फारस से आमंत्रित किया गया था। उन्होंने मुगल स्कूल की स्थापना में एक आधारभूत भूमिका निभाई और स्मारकीय हमजानामा परियोजना का पर्यवेक्षण किया।
- **दसवंत:** एक साधारण पृष्ठभूमि के एक अत्यधिक प्रतिभाशाली चित्रकार जिन्हें व्यक्तिगत रूप से अकबर द्वारा संरक्षण दिया गया था लेकिन दुखद रूप से आत्महत्या से उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने महाकाव्य रज्मनामा में भारी योगदान दिया।
- मुगल चित्रकला अकबर के तहत फारसी संश्लेषण से जहाँगीर के तहत ऊंचे, ज्वलंत प्रकृतिवाद में नाटकीय रूप से बदल गई।
- शाही चित्रशाला एक अत्यधिक संगठित और भारी वित्त पोषित शाही विभाग था।

Additional Knowledge

- **गलत विकल्प:** ये विकल्प दृढ़ता से स्थापित ऐतिहासिक कालक्रम और कलात्मक विशेषताओं को पूरी तरह से मिलाते हैं। उदाहरण के लिए, मंसूर को अकबर के शुरुआती दरबार या मीर सैय्यद अली को पक्षी चित्रकला से जोड़ना पूरी तरह से तथ्यात्मक रूप से गलत है।

Q24. देवराय I के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

- A. देवराय I 1406 में सिंहासन पर बैठा।
- B. पुर्तगाली इतिहासकार नुनीज़ ने दर्ज किया है कि देवराय ने विजयनगर शहर का बहुत विस्तार किया।
- C. उनके शासनकाल के दौरान तुंगभद्रा नदी पर एक बड़ा बांध और एक लंबी जलप्रणाली का निर्माण किया गया था।
- D. देवराय ने फिरोज शाह बहमनी के साथ युद्ध किया।
- E. युद्ध देवराय द्वारा फिरोज शाह को हराने और गुलबर्गा को हड़पने के साथ समाप्त हुआ।

(a) केवल A, B, C और D

(b) केवल B, C, D और E

(c) केवल A, C और E

(d) केवल A, B और D

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर (a) है।

देवराय I विजयनगर साम्राज्य के संगम वंश का एक अत्यंत सक्षम सम्राट था। उसका शासनकाल पड़ोसी सल्तनतों के साथ निरंतर सैन्य संघर्षों के साथ-साथ महत्वपूर्ण शहरी और कृषि विकास द्वारा चिह्नित था।

Information Booster

- देवराय I 1406 (A) में सिंहासन पर बैठा, और लगभग 1422 तक शासन किया।
- पुर्तगाली इतिहासकार फर्नाओ नुनीज़ ने उल्लेख किया (B) कि देवराय ने राजधानी के किलेबंदी और शहरी लेआउट में भारी सुधार और विस्तार किया।

- उनकी सबसे स्थायी विरासत तुंगभद्रा नदी (C) पर एक विशाल बांध और एक जटिल जलप्रणाली का निर्माण है, जिसने पानी की कमी को हल किया और कृषि पैदावार को बढ़ावा दिया।
- वह उपजाऊ रायचूर दोआब क्षेत्र को लेकर बहमनी सुल्तान ताजुद्दीन फिरोज शाह के साथ कड़वे सैन्य संघर्ष (D) में लगा रहा।
- उसने बहमनी घुड़सवार सेना का मुकाबला करने के लिए कुशल तुर्की तीरंदाजों की भर्ती करके विजयनगर सेना को पुनर्गठित भी किया।

Additional Knowledge

- विकल्प B, C और D मुख्य रूप से गलत हैं क्योंकि वे या तो वैध उपलब्धियों को बाहर करते हैं या कथन E को शामिल करते हैं। कथन E ऐतिहासिक रूप से गलत है। देवराय I ने फिरोज शाह बहमनी को हराकर गुलबर्गा पर कब्जा नहीं किया था। वास्तव में, देवराय को उनके शुरुआती संघर्षों में एक महत्वपूर्ण हार का सामना करना पड़ा था, जिससे उन्हें भारी हर्जाना देने, बांकापुर क्षेत्र को सरेंडर करने और शांति सुरक्षित करने के लिए अपनी बेटी की शादी फिरोज शाह से करने के लिए मजबूर होना पड़ा था।

Q25. 1813 के चार्टर अधिनियम के तहत शिक्षा के लिए आवंटित वार्षिक राशि थी:

- (a) ₹50,000
- (b) ₹1,00,000
- (c) ₹5,00,000
- (d) ₹10,00,000

Ans.(b)

Sol. सही उत्तर है (b)।

1813 के चार्टर अधिनियम में एक ऐतिहासिक प्रावधान शामिल था जिसमें ईस्ट इंडिया कंपनी को साहित्य के पुनरुद्धार और सुधार और भारत के विद्वान मूल निवासियों को प्रोत्साहन देने के साथ-साथ आधुनिक विज्ञान की शुरुआत के लिए सालाना एक लाख रुपये से कम की राशि अलग रखने का आदेश दिया गया था।

Information Booster

- यह पहली बार था जब ब्रिटिश संसद ने आधिकारिक तौर पर भारतीय लोगों की शिक्षा के प्रति औपनिवेशिक राज्य की जिम्मेदारी को मान्यता दी थी।
- यह खंड मुख्य रूप से चार्ल्स ग्रांट जैसे उपयोगितावादी विचारकों और इंजीलवादी ईसाई मिशनरियों के बढ़ते दबाव का प्रत्यक्ष परिणाम था।
- हालाँकि, शिक्षा के माध्यम और प्रदान किए जाने वाले ज्ञान के प्रकार पर एक भयंकर, पंगु बनाने वाली बहस के कारण यह राशि कई वर्षों तक काफी हद तक खर्च नहीं की गई थी।
- इस अधिनियम ने आधिकारिक तौर पर ईसाई मिशनरियों को अपने धर्म का प्रचार करने और अंग्रेजी स्कूल स्थापित करने के लिए कानूनी रूप से भारत में प्रवेश करने की भी अनुमति दी।

- इसने भारत में कंपनी के व्यापार एकाधिकार को निर्णायक रूप से समाप्त कर दिया, इसे अत्यधिक लाभदायक चाय व्यापार और चीन के साथ व्यापार को छोड़कर सभी ब्रिटिश विषयों के लिए खोल दिया।
- इस शैक्षिक जनादेश ने भारत में आधुनिक राज्य-प्रायोजित शिक्षा प्रणाली के लिए पहली, यद्यपि हिचकिचाहट वाली, नींव रखी।

Additional Knowledge

- ₹50,000: यह राशि ब्रिटिश भारतीय इतिहास में किसी भी प्रमुख मूलभूत शैक्षिक अनुदान के संबंध में पूरी तरह से तथ्यात्मक रूप से गलत है।
- ₹5,00,000: 1813 अधिनियम के लिए एक गलत आंकड़ा।
- ₹10,00,000: व्यापक वुड्स डिस्पैच के समय तक, शैक्षिक व्यय में काफी वृद्धि हुई, लेकिन मूलभूत 1813 अधिनियम ने विशेष रूप से केवल एक लाख रुपये निर्धारित किए थे।

Q26. निम्नलिखित में से कौन सा स्रोत अंगुत्तर निकाय की तुलना में महाजनपदों की एक अलग सूची प्रदान करता है?

- (a) अर्थशास्त्र
- (b) भगवती सूत्र
- (c) ऋग्वेद
- (d) मनुस्मृति

Ans.(b)

Sol. सही उत्तर है (b)।

भगवती सूत्र, एक प्रमुख जैन विहित ग्रंथ, सोलह महाजनपदों की एक विशिष्ट सूची प्रदान करता है जो बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय में पाई जाने वाली प्रसिद्ध सूची से काफी भिन्न है। यह पाठ एक अद्वितीय जैन भौगोलिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य को दर्शाता है।

Information Booster

- बौद्ध अंगुत्तर निकाय की सूची को इतिहासकारों द्वारा सबसे आधिकारिक माना जाता है, जिसमें मगध, कोशल, वत्स और अवंती जैसे प्रमुख राज्य शामिल हैं।
- भगवती सूत्र की वैकल्पिक सूची में कई अलग-अलग क्षेत्रीय नाम शामिल हैं, जैसे वंग, मलय, मालव, अच्च और कोच्च, जो थोड़े बाद के संकलन या भौगोलिक रूप से विविध दृष्टिकोण का संकेत देते हैं।
- दोनों धार्मिक ग्रंथ मगध साम्राज्य के उदय से पहले ठीक सोलह प्रमुख क्षेत्रीय राज्यों के संख्यात्मक अस्तित्व पर सार्वभौमिक रूप से सहमत हैं।
- यह भिन्नता खूबसूरती से इस बात पर प्रकाश डालती है कि कैसे प्राचीन ग्रंथों ने अपने स्वयं के धार्मिक संरक्षण और सांस्कृतिक पदचिह्न के क्षेत्रों को प्राथमिकता दी।
- मध्य गंगा घाटी पर सख्त बौद्ध फोकस की तुलना में जैन पाठ पूर्वी और दक्षिणी भौगोलिक विस्तारों पर काफी अधिक जोर देता है।

• प्राचीन भारत के जटिल प्रारंभिक ऐतिहासिक भूगोल के पुनर्निर्माण करने वाले विद्वानों के लिए इन पाठ्य विविधताओं को समझना महत्वपूर्ण है।

Additional Knowledge

- **अर्थशास्त्र:** कौटिल्य का ग्रंथ व्यापक रूप से शासनकला, अर्थव्यवस्था और सैन्य रणनीति पर केंद्रित है; यह विशिष्ट 16 महाजनपदों को सूचीबद्ध करने के बजाय सैद्धांतिक रूप से राज्यों के प्रकारों पर चर्चा करता है।
- **ऋग्वेद:** एक प्रारंभिक वैदिक पाठ के रूप में, यह एक अर्ध-खानाबदोश आदिवासी समाज को दर्शाता है और छठी शताब्दी ईसा पूर्व के बड़े, बसे हुए क्षेत्रीय राज्यों के गठन से पूरी तरह से पहले का है।
- **मनुस्मृति:** एक धर्मशास्त्र पाठ जो रूढ़िवादी कानून, वर्णाश्रम धर्म और सामाजिक संहिताओं पर भारी ध्यान केंद्रित करता है, न कि राजनीतिक भूगोल का विवरण देने पर।
- छात्रों को याद रखना चाहिए कि पाणिनी की अष्टाध्यायी में कई जनपदों का भी उल्लेख है, जो इन धार्मिक ग्रंथों में महत्वपूर्ण भाषाई पुष्टि जोड़ता है।

Q27. पाटलिपुत्र के नगरपालिका प्रशासन का प्रबंधन किसके द्वारा किया जाता था:

- (a) महामात्रों
- (b) तीस सदस्यों का एक आयोग
- (c) एकल राज्यपाल
- (d) सैन्य अधिकारियों

Ans.(b)

Sol. सही उत्तर है (b)।

ग्रीक राजदूत मेगस्थनीज की प्रसिद्ध कृति 'इंडिका' के अनुसार, महान मौर्य राजधानी पाटलिपुत्र के नगरपालिका प्रशासन का प्रबंधन तीस सदस्यों वाले एक परिष्कृत आयोग द्वारा किया जाता था। इस आयोग को आगे व्यवस्थित रूप से छह विशिष्ट बोर्डों में विभाजित किया गया था।

Information Booster

- छह बोर्डों में से प्रत्येक में ठीक पांच सदस्य शामिल थे, जो अलग-अलग और अत्यधिक विशिष्ट शहरी जिम्मेदारियों को संभालते थे।
- छह बोर्ड सावधानीपूर्वक प्रबंधन करते थे: औद्योगिक कला, विदेशियों का मनोरंजन, जन्म और मृत्यु का पंजीकरण, व्यापार और वाणिज्य, निर्मित वस्तुओं का पर्यवेक्षण, और करों का सख्त संग्रह।
- यह अत्यधिक विस्तृत नागरिक प्रशासनिक संरचना मौर्य चरमोत्कर्ष के दौरान असाधारण रूप से संगठित शहरी नौकरशाही को प्रदर्शित करती है।
- कर बोर्ड बेची गई वस्तुओं की कीमतों का एक-दसवां हिस्सा एकत्र करने के लिए जिम्मेदार था, और राज्य के खिलाफ किसी भी धोखाधड़ी को कड़ी सजा दी जाती थी।

- मेगस्थनीज का विवरण स्वदेशी भारतीय ग्रंथों के पूरक, मौर्य शहरी प्रशासन के लिए सबसे महत्वपूर्ण विदेशी साहित्यिक साक्ष्य प्रदान करता है।
- कौटिल्य का अर्थशास्त्र भी नागरिक के रूप में जाने जाने वाले एक उच्च पदस्थ शहर अधीक्षक का उल्लेख करता है, जो मेगस्थनीज के अवलोकनों का सहज रूप से पूरक है।

Additional Knowledge

- **महामात्रों:** ये मौर्य साम्राज्य में उच्च पदस्थ अधिकारी या मंत्री थे जो पूरे साम्राज्य में फैले विभिन्न प्रशासनिक विभागों के लिए जिम्मेदार थे, लेकिन वे विशेष रूप से एक स्थानीय नगरपालिका आयोग नहीं थे।
- **एकल राज्यपाल:** राजधानी शहर का शासन नगरपालिका स्तर पर निरंकुश होने के बजाय सामूहिक, नौकरशाही और अत्यधिक प्रत्यायोजित था।
- **सैन्य अधिकारियों:** जबकि मेगस्थनीज सैन्य प्रशासन के लिए एक बहुत ही समान 30-सदस्यीय समिति का उल्लेख करते हैं, नागरिक कर्तव्य पूरी तरह से अलग थे।

Q28. मेघदूत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

- A. कविता में एक यक्ष का वर्णन है जो एक बादल के माध्यम से अपनी प्रेमिका को संदेश भेजता है।
- B. यक्ष को रामगिरि से निर्वासित किया गया था।
- C. कविता मंदाक्रांता छंद में रचित है।
- D. कविता यक्ष की प्रेमिका के निवास स्थान अलका की ओर बादल के मार्ग का वर्णन करती है।
- E. कविता को बीस सर्गों के महाकाव्य के रूप में संरचित किया गया है।

(a) केवल A, B, C और D

(b) केवल A, C और E

(c) केवल B, D और E

(d) केवल A, B और E

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर (a) है।

मेघदूत (बादल संदेशवाहक) कालिदास की सबसे प्रसिद्ध कृतियों में से एक है, जो संदेश काव्य की शैली को परिभाषित करती है। हालाँकि वृत्तांत, भौगोलिक विवरण और काव्य छंद आधारभूत हैं, लेकिन ग्रंथ का संरचनात्मक वर्गीकरण इसे उनके अन्य महाकाव्यों से अलग करता है।

Information Booster

- मूल विषय (A) एक यक्ष, एक प्रकृति की आत्मा के इर्द-गिर्द घूमता है, जो अपनी पत्नी को अपना गहरा स्नेह पहुँचाने के लिए एक गुजरते बादल से कहता है।
- अपने स्वामी कुबेर के प्रति अपने कर्तव्यों की उपेक्षा के कारण यक्ष को एक वर्ष के लिए रामगिरि (B) के आश्रमों में निर्वासित कर दिया गया था।

- कालिदास ने पूरी कविता की रचना मंदाक्रांता छंद (C) में महारत के साथ की, एक धीमी और राजसी लय जो विरह (विप्रलम्भ श्रृंगार) के भारी दुख को व्यक्त करने के लिए पूरी तरह उपयुक्त है।
- ग्रंथ भौगोलिक मार्ग (D) का सजीव वर्णन करता है जो बादल को उज्जैन से होते हुए हिमालय में अलका के पौराणिक शहर की ओर मध्य और उत्तरी भारत में लेना चाहिए।
- कविता प्राचीन भारत के वनस्पतियों, जीवों और शहरी जीवन की समृद्ध झलकियाँ प्रदान करती है।

Additional Knowledge

- विकल्प B, C और D मुख्य रूप से गलत हैं क्योंकि उनमें गलत कथन शामिल या बाहर किए गए हैं। कथन E पूरी तरह से गलत है। मेघदूत बीस सर्गों का महाकाव्य नहीं है; यह एक खंडकाव्य है जिसमें 110 से अधिक छंद शामिल हैं जो दो भागों में विभाजित हैं: पूर्वमेघ और उत्तरमेघ। कालिदास के रघुवंश और कुमारसंभव को महाकाव्यों के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

Q29. लखनऊ समझौते (1916) ने किस महत्वपूर्ण राजनीतिक सिद्धांत को स्वीकार किया?

- (a) सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार
- (b) मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचक मंडल
- (c) पूर्ण स्वतंत्रता
- (d) सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व का उन्मूलन

Ans.(b)

Sol. सही उत्तर (b) है।

1916 का लखनऊ समझौता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के बीच एक ऐतिहासिक समझौता था। ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक संयुक्त मोर्चा बनाने के लिए, कांग्रेस ने राजनीतिक प्रतिनिधित्व के संबंध में एक महत्वपूर्ण वैचारिक रियायत दी।

Information Booster

- इस समझौते पर मुख्य रूप से कांग्रेस का प्रतिनिधित्व करने वाले बाल गंगाधर तिलक और मुस्लिम लीग का प्रतिनिधित्व करने वाले मोहम्मद अली जिन्ना द्वारा बातचीत की गई थी।
- इसका सबसे महत्वपूर्ण परिणाम यह था कि कांग्रेस ने औपचारिक रूप से मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचक मंडल की प्रणाली को स्वीकार कर लिया।
- अलग निर्वाचक मंडल ब्रिटिशों द्वारा 1909 के मॉर्ले-मिंटो सुधारों के माध्यम से पहले ही पेश किए जा चुके थे, जिसका कांग्रेस ने शुरू में विरोध किया था।
- समझौते में शाही और प्रांतीय दोनों विधायी परिषदों में मुस्लिम प्रतिनिधित्व के एक निश्चित अनुपात पर भी सहमति बनी।

• हालांकि इसने तत्काल हिंदू-मुस्लिम राजनीतिक एकता हासिल की, इतिहासकारों का तर्क है कि इसने अनजाने में सांप्रदायिक राजनीति को वैध बना दिया, जिससे एक ऐसी मिसाल कायम हुई जो अंततः विभाजन के रूप में परिणत हुई।

Additional Knowledge

- विकल्प A गलत है क्योंकि 1916 के संभ्रांत नेतृत्व द्वारा सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को व्यावहारिक रूप से व्यवहार्य नहीं माना गया था; मतदान के अधिकार संपत्ति और शैक्षिक योग्यताओं द्वारा भारी रूप से प्रतिबंधित रहे।
- विकल्प C गलत है क्योंकि 1916 में मांग ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर "स्व-शासन" (डोमिनियन स्टेट्स) की थी, न कि पूर्ण स्वराज की, जिसे बहुत बाद में 1929 के लाहौर सत्र में अपनाया गया था।
- विकल्प D ठीक उसका उल्टा है जो हुआ था। समझौते ने सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व को समाप्त करने के बजाय उसे और सुदृढ़ कर दिया।

Q30. अमृत-कुंड, जो स्वास्थ्य से संबंधित है, का फारसी में अनुवाद किस शीर्षक के अंतर्गत किया गया था?

- (a) हौज़-उल-हयात
- (b) नुह सिपिहर
- (c) फतेहनामा
- (d) ताज-उल-मासिर

Ans.(a)

Sol. Explanation:

सही उत्तर है (a)।

प्राचीन संस्कृत ग्रंथ 'अमृत-कुंड', जो हठयोग प्रथाओं और शारीरिक स्वास्थ्य से संबंधित है, का अरबी और बाद में फारसी में 'हौज़-उल-हयात' (जीवन का पूल) के शीर्षक के अंतर्गत अनुवाद किया गया था।

Information Booster:

- अमृत-कुंड का अनुवाद इस्लामी विद्वानों और स्वदेशी भारतीय योग परंपराओं के बीच शुरुआती बौद्धिक संपर्क को दर्शाता है।
- ऐतिहासिक परंपरा का दावा है कि इस ग्रंथ को सबसे पहले कामरूप के एक ब्राह्मण तपस्वी द्वारा इस्लामी विद्वानों से परिचित कराया गया था।
- इसका पहली बार 13 वीं शताब्दी के दौरान विद्वान रुकन अल-दीन समरकंदी द्वारा अरबी में अनुवाद किया गया था।
- बहर अल-हयात (जीवन का महासागर) शीर्षक वाला एक प्रभावशाली फारसी अनुवाद बाद में 16 वीं शताब्दी में मुहम्मद गौस ग्वालियर द्वारा निर्मित किया गया था।
- यह ग्रंथ शरीर के सूक्ष्म जगत और स्थूल जगत के पत्राचार, प्राणायाम और योग आसनों से संबंधित है।
- इसने भारतीय सूफियों को हठयोग से परिचित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे कई समन्वयवादी रहस्यवादी प्रथाएं विकसित हुईं।

Additional Knowledge:

- **नुह सिपिहर:** अमीर खुसरो द्वारा रचित एक प्रसिद्ध काव्य कृति है, जिसका अर्थ है 'नौ आकाश'। यह भारत की जलवायु और संस्कृति की प्रशंसा करती है।
- **फतेहनामा:** 'विजय की घोषणा' के लिए एक सामान्य शब्द है। इसे चचनामा जैसे ग्रंथों में उपयोग किया गया था।
- **ताज-उल-मासिर:** दिल्ली सल्तनत का पहला आधिकारिक इतिहास है, जिसे हसन निजामी ने फारसी में लिखा था।

